

पाठ - 10

फजर की दो रकअतें

الدرس العاشر - هندي

رکعتا الفجر

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन सुन्नतों को सफर या हज़र, किसी हालत में नहीं छोड़ा करते थे, उनमें फ़ज़्र की दो रकअत सुन्नत भी शामिल है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रजियल्लाहु अन्हा से उल्लिखित है:

أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ عَلَى شَيْءٍ مِنَ التَّوَائِلِ أَشَدَّ مَعَاهَدَةً مِنْهُ عَلَى رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الصُّبْحِ

यानी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नफ़ल नमाज़ों में सुबह से पहले दो रकअत सुन्नत से ज़्यादा किसी दूसरी नफ़ल नमाज़ पर जोर नहीं देते थे। (मुत्तफ़क़ अलैह, बुखारी 1163, मुस्लिम 724)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हीं दो रकअतों के बारे में फ़रमाया है : "मेरी नज़र में वे दोनों, तमाम दुनिया से ज़्यादा महबूब हैं, (सही मुस्लिम 725)

मसनून यह है कि इंसान पहली रकअत में सूरह काफ़िरुन और दूसरी रकअत में सूरह इख़लास की तिलावत करे। और कभी पहली रकअत में इसी तरह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमल की वजह से इन दोनों रकअतों को हलकी पढ़ना मसनून है। जो इंसान इन दोनों रकअत को फ़ज़्र से पहले न पढ़ सका हो, उसके हक़ में मसनून है कि वह फ़ज़्र की नमाज़ के बाद कज़ा कर ले। अलबत्ता सूरज उगने के बाद और सूरज के एक नेज़ा ऊपर उठने के बाद ज़वाले आफ़ताब तक इन दोनों रकअतों का कज़ा करना ज़्यादा बेहतर है।

चाशत की नमाज़ : चाशत की नमाज़ को सलाते अक्वाबीन भी कहते हैं। यह सुन्नते मुवक्किदा है और उसके लिए बेशुमार हदीसें आयी हैं। अबूज़र रजियल्लाहु अन्हु से उल्लिखित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :

يُصْبِحُ عَلَى كُلِّ سَلَامَةٍ مِنْ أَحَدِكُمْ صَدَقَةٌ، فَكُلُّ تَسْبِيحَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَحْمِيدَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَهْلِيلَةٍ صَدَقَةٌ، وَكُلُّ تَكْبِيرَةٍ صَدَقَةٌ، وَأَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ صَدَقَةٌ، وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ صَدَقَةٌ، وَيُجْزَى مِنْ ذَلِكَ رَكْعَتَانِ يَرْكَعُهُمَا مِنَ الصُّحَى

तुम में से हर व्यक्ति के ज़िम्मे, उसके शरीर के तमाम जोड़ों की तरफ़ से सदका वाजिब है। अतएव सुब्हानल्लाह कहना सदका है। अल्लहम्दुलिल्लाह कहना सदका है। लाइलाह इल्लल्लाह कहना सदका है। अल्लाहु अकबर कहना सदका है। भलाई का हुक्म देना सदका है। बुराई से रोकना सदका है। और चाशत के वक़्त की दो रकअतें इन सब की अदायगी के लिए काफ़ी हैं, (सही मुस्लिम 720)

अबू हुरैरा रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि

أَوْصَانِي خَلِيلِي بِثَلَاثٍ لَا أَدْعُهُنَّ حَتَّى أَمُوتَ: (صَوْمٌ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ، وَصَلَاةُ الصُّحَى، وَنَوْمٌ عَلَى وَتْرٍ)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन बातों की नसीहत फ़रमायी है कि मैं उन्हें मरते दम तक न छोड़ूँ पहली बात यह है कि मैं हर महीने के तीन दिनों का रोजा रखूँ। दूसरी बात यह है कि मैं चाशत की नमाज़ का एहतिमाम करूँ और तीसरी बात यह है कि मैं वित्र पढ़ने से पहले न सोऊँ (बुखारी 1178, मुस्लिम 721) चाशत की नमाज़ का अफ़ज़लतरीन वक़्त यह है जब सूरज बुलन्द हो, और धूप तेज़ हो जाए, और ज़वाले आफ़ताब के साथ उसका वक़्त ख़त्म हो जाता है। यह कम से कम दो रकअतें मसनून हैं और ज़्यादा की कोई सीमा नहीं है।